डॉ. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा

सरोज स्मृति (निराला)

प्रश्न : निराला द्वारा रचित 'सरोज स्मृति' के आधार पर सरोज का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर

सरोज स्मृति निराला की प्रतिनिधि कविताओं में से एक है। इस कविता में निराला जी अपनी दिवंगत पुत्री सरोज की मृत्यु का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है। स्वाभावतः यह कविता विलक्षण विलाप की स्थिति में लिखी गई है। निराला ने इस कविता में अपनी आर्थिक विफलता का वर्णन किया है। पुत्री की मौत पर कवि सहज नहीं रह पाता उसकी संपूर्ण चेतना धिक्कार उठती है कि वह अपनी उस कोमल पुत्री की रक्षा न कर पाया। कविता का यही बोध संपूर्ण कविता का केन्द्र बिन्दु है।

अपनी पुत्री सरोज के मृत्यु के परिप्रेक्ष्य में कवि ने दो प्रश्न उभरे हैं। एक दृश्य पुत्री सरोज और निराला से सम्बन्धित है और दूसरा दृश्य साहित्यकार निराला से। कवि ने पहले दृश्य में सरोज के बाल्याकाल से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक की घटनाओं का चित्रण किया है। इस दृश्य में उसकी आँखों के आगे गत जीवन की सारी स्मृतियाँ लहरा उठती हैं। सरोज की बाल क्रीड़ाओं का सौंदर्य और यौवन का कवित्वपूर्ण विकास। सवा वर्ष की बच्ची को अपने माँ के प्यार से वंचित होना पड़ता है। उसकी छोटी-छोटी इच्छाओं को कवि पूरा करना चाहता है, पर अभाव के कारण बच्ची करुणा कवलित रहती है।

सरोज की स्मृति को अपनी गिरफ्त में जकड़ लेने की पीड़ा इस कविता को बहुत ही दारुण बना देती है। सरोज की स्मृति में निराला जिन्दगी तलाश रहे थे। यहाँ सरोज निर्विकार होकर भी उपस्थित है बिल्कुल निष्कलुष अपने पिता की तरह। कवि की डबडबायी हुयी आँखों में सरोज की चाहतें, तकलीफ और इच्छाएँ प्रतिबिम्बित होती हैं। सरोज की मृत्यु कोई सामान्य मृत्यु नहीं है, वह देश के एक कवि की भविष्य की मृत्यु है। कवि को बार-बार सरोज की चपलता, निर्द्वन्द्व आह्लाद और उसकी मनोहर हँसी उसकी स्वतंत्र चेतना की याद दिलाती है। निराला ने सरोज के चरित्र-चित्रण में बार-बार उसकी स्मृतियों का सहारा लिया है। कवि पुत्री के शोक में

P.T.O

गहरा करने के लिए अपने वैवाहिक जीवन का भी सहारा लिया है। यह वर्णन की विलोम पद्धति है। इसमें पुत्री के बालिका रूप के वर्णन में एक साथ धीरे-धीरे फिर बढ़ा चरण के रूप में युवा पुत्री के रूप का ऐसा सुघड़ एवं निर्लिप्त वर्णन किया है जिसका जोड़ हिन्दी काव्य में मिलना मुश्किल है —

" धीरे-धीरे फिर बढ़ा चरण
बाल्य की कलियों का प्रांगण
कर पार, कुंज तारुण्य सुघर
लाली लावण्य भार थर-थर
काँपा कोमलता पर सस्वर
ज्यों मालकौश नव वीणा पर !"

प्रांगन में खुलेपन का बोध है, जहाँ कोई बंधन नहीं। बाल्य-काल में वह स्वच्छंद होकर केलि करती है। और युवावस्था आते ही वह फैलाव में संघटित हो जाती है। कुंज से घनत्व का बोध होता है। इसके साथ हरियाली, शीतलता का भाव जुड़ा हुआ है। कुंज की सुडोलता उसके शरीर में है। और गंभीरता उसके हृदय के अंदर। लावण्य भार से कोमलता काँप उठती है। तात्पर्य यह कि आभा रह-रह कर छिप-छिपा उठती है। लावण्य का एक अर्थ यह भी है कि स्थिर न रहना, चंचल होना। उसके चेहरे पर एक सलज्ज गंभीरता व्याप्त है। मालकौश का स्वर जैसे वीणा पर गुंजायमान हो रहा है। उसका प्रकाश, प्रकाश बिम्ब है या दृश्य बिम्ब है और उसकी उपमा ध्वनि से की गई है। मूर्त्त को अमूर्त द्वारा प्रकट करना यह निराला के वश की ही बात थी। मालकौश उच्च भावों का गंभीर राग है जो रात्रि के तीसरे पहर में गाए जाते हैं। इसका स्वर कोमल होता है। इस राग से सरोज के लावण्य की उपमा देने की कोशिश की गयी है। सरोज में सलज्ज गंभीरता, वाणी की मृदुता अभिव्यक्त होती है। यदि उसके रूप की गहराई में आगे और जाएँ तो निराला कह उठते हैं —

नैश स्वप्न ज्यों तू मंद-मंद
फूटी ऊषा जागरण-छंद
काँपी भर निज आलोक हुए
काँपा वन, काँपा दिक्-प्रसार
परिचय-परिचय पर खिला सकल
नभ पृथ्वी, द्रुम कलि, किसलय-दल।

यानि बालावस्था में वह रात्रि के समान थीं। स्वप्न में अतृप्त इच्छाओं के समान थी यथा जिम्मेदारियों से मुक्त थीं। जैसा स्वप्न उषा के कर्ममय जीवन में संक्रमित होता है। युवावस्था उषा की तरह फूटी। उषा नई स्फूर्ति, प्रेरणा और ताजगी का प्रतीक है। युवावस्था जागरण-छंद यानि उद्बोधन गीत की तरह है जिससे आंतरिक वृत्तियाँ जाग उठती हैं। इसके साथ संपूर्ण सृष्टि का नया परिचय मिलता है। वह नए तरह से प्रकृति के साथ एक लगाव महसूस करती हैं। भावनाओं की जो तरंगें मन में उठी थी वही किं-प्रसार भी दिखाई देने लगता है। प्रसाद जी ने अपने काव्य 'कामायनी' में सौंदर्य का ऐसा ही चित्रण किया है।

आलोक भार का तात्पर्य पूर्ण सौंदर्य से है। वह आंतरिक तेज, ओजस्विता आदि के कारण अंदर से कांपी। यानी नए ढंग से सक्रियता पायी। यह सात्विक अनुभाव है। इससे शृंगारिक विकास, एवं भावनाओं का संकेत है। इस सौंदर्य के साथ शारीरिक विकास के साथ-साथ भाव जगत का परिवर्तन भी लक्षित है।

'क्या दृष्टि! अतल की सिक्त धार
ज्यों भोगवती उठी अपार।'

यहाँ दृष्टि के बाद विस्मयादि बोधक उसके विलक्षण होने का प्रतीक है। इस विलक्षण होने में केवल सौंदर्य ही नहीं, उसकी आकांक्षा एवं करुणा की भी झलक मिलती है। भोगावती की सुंदर तरंग टल-मल करती ऊपर उठती हैं, फिर गुरुत्वाकर्षण के कारण अपनी उमड़न को शांत कर देती है। यानी यौवन काल में चंचलता उत्तेजन और उल्लास भोगावती की तरह उठते हैं, पर अवस्थाजन्य स्वाभाविक लज्जा इन भावों पर नियंत्रण रखती है। अतः वे उमंगे फिर शांत हो जाती है।

इस प्रकार निराला ने 'सरोज स्मृति' में सरोज का अत्यन्त ही मनोरम चित्र प्रस्तुत किया है।

P.G. Semester
CC - X

'Saroj Smriti'